3. व्यंजना शब्द-शक्ति

unacademy

शब्द से सामान्य या मुख्य-सांकेतिक, लक्ष्यार्थ या लक्षणों से मिलता-जुलता अर्थ तो प्राप्त हुआ करता है, इसके अतिरिक्त भी अर्थ प्राप्त हुआ करता है। वही अर्थ वास्तव में काव्य के क्षेत्र में अपना विशेष महत्त्व एवं प्रभाव रखता है। इस अन्यार्थ की प्राप्ति हमें जिस रूप और शक्ति से हुआ करती है, उसी को सामान्य अर्थों में व्यंजना शब्द-शक्ति कहते हैं।

परिभाषा: व्यंजना शब्द-शक्ति

unacademy

"अभिधा और लक्षणा शब्द-शक्तियों से प्राप्त होने वाले अर्थ के बोध के बाद अन्य अर्थ का बोध जिस शब्द-शक्ति से हुआ करता है, उसे व्यंजना शब्द-शक्ति कहते हैं। दूसरे शब्दों में, शब्द के जिस व्यापार से, उसके 'मुख्यार्थ' और 'लक्ष्यार्थ' से भिन्न किसी विशेष या गम्भीर-रूढ़ अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द-शक्ति कहा

unacademy

उदाहरण: "सूर्य अस्त हो गया।"

व्यंजक या व्यंजना शब्द-शक्ति से इसका अर्थ होगा प्रयोक्ता & श्रोता की रुचि, स्थिति और प्रवृत्ति के अनुसार – *अब मुझे दीपक जलाना चाहिए, प्रकाश की व्यवस्था करनी चाहिए, भोजन करना चाहिए, घर जाना चाहिए, पूजा करनी चाहिए ...*

unacademy

व्यंजना शब्द शक्ति के 2 भेद: -

1. शाब्दी व्यंजना शब्द-शक्ति

2. आर्थी व्यंजना शब्द-शक्ति

unacademy

(ख) आर्थी व्यंजना शब्द-शक्ति

जब व्यंग्यार्थ किसी विशेष शब्द पर अवलम्बित न होकर समग्र अर्थ पर ही अवलम्बित रहा करता है। इसमें किसी एक शब्द के स्थान पर उसका समानार्थी शब्द रखा जा सकता है। ऐसा करने से भी प्राय: व्यंग्यार्थ में कोई परिवर्तन नहीं आया करता है।

निष्कर्ष

- शब्द का प्रयोग अनेक स्थितियों में होता।
- काव्य में रसात्मकता व चमत्कार लाने-हेतु, व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग
- शब्द की शक्ति पर ही अर्थ प्रकाशित हो पाता है।

unacademy

धन्यवाद

डॉ.चंदन शर्मा के द्वारा

unacademy

शब्द-शक्ति

- विषय-प्रवेश
- शब्द का महत्त्व
- शब्द-अर्थ-सम्बन्ध
- शब्द-शक्ति: परिभाषा
- शब्द-शक्ति: भेद-रूप विवेचन
  - अभिधा शब्द-शक्ति
  - लक्षणा शब्द-शक्ति
  - व्यंजना शब्द-शक्ति
- निष्कर्ष